REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

निर्मल वर्मा कृत एक चिथडा सुख

प्रा. डॉ. गंगाधर धुळप्पा बिराजदार
हिंदी विभाग प्रमुख, दयानंद कला एवं शास्त्र महाविदयालय,
सोलापूर.

प्रस्तावना :

निर्मल वर्मा के पिता श्री. नंदकुमार वर्मा मूलतः पंजाब के रहनेवाले थे । नंदकुमार जी पटियाला से.बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद लाहौर के चीन्स कॉलेज में वार्डन के रूप में नियुक्त हुए । कुछ वर्षों तक इस पद पर कार्य करने के बाद इनकी नियुक्ति दिल्ली में भारत सरकार के रक्षा विभाग में हुई । निर्मल वर्मा की माता पुरानी दिल्ली में नीम का कटरा अर्थात चाँदनी चौक के खत्री परिवार से थीं । इन दिनों भारत पर अंग्रेजों का शासन था । अंग्रेज शासक दिल्ली की गर्मी से बचने के लिए शिमला चले जाते थे । इन दिनों में वे सभी शासकीय कार्य शिमला से ही करते थे । इसलिए भारत सरकार के सभी महत्तवपूर्ण सरकारी कार्यालयों को भी गर्मियों मे शिमला स्थानांतरित कर दिया जाता था । नंदकुमार वर्मा रक्षा विभाग में नियुक्त थे, इसलिए उनको भी प्रतिवर्ष गर्मी में अपने कार्यालय के साथ शिमला जाना होता था । इन्हीं श्री. नंदकुमार वर्मा के यहाँ शिमला में 5 अप्रैल 1929 को निर्मल वर्मा का जन्म हुआ । निर्मल एक भर–पूरे परिवार में जन्म थे । अपने परिवार में निर्मल चार बडी बहिनों और तीन बडे भाइयों के बाद आठवें नंबर की संतान थे । उनका बचपन बडे ही लाड–प्यार से बीता । निर्मल के परिवार की आर्थिक स्थिति संपन्न थी, जिससे उन्हें बचपन में कभी किसी अभाव का सामना नहीं करना पडा । निर्मला को माता–पिता से काफी ममत्व मिला । घर में दादाजी और बडी बहनों का भी बालक निर्मल के प्रति खास लगाव था । निर्मल का बचपन अपनी बडी बहनों से काफी प्रभावित रहा है । साहित्य के प्रति निर्मल को प्रेरित करने का काम इन्हीं बहनों ने किया । अपने मीठे बचपन की इन्हीं स्मृतियों का प्रभाव निर्मल पर आज भी है । इसी कारण निर्मल के कथा साहित्य में बचपन का अत्यंत मनमोहक वर्णन मिलता है । निर्मल बडे होकर क्या बने इसके प्रति माता–पिता का कोई विशेष आग्रह नहीं था । लेकिन निर्मल में बडा होकर कुछ बनने की ख्वाहिश अवश्य थी । इन दिनों निर्मल को जहाजों के कप्तान की तस्वीरें प्रभावित किया करती थी । किंतु जैसे–जैसे वे बडे होने लगे, वैसे–वैसे उनके सपने भी बदलने लगे । कुछ समय बाद उन्हें सैनिकों की पोशाक पसंद आने लगी, पर वे सैनिक नहीं बन सके । निर्मल की प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली और शिमला में हुई । निर्मल ने 1949 में दिल्ली के सेंट स्टीफेन्स कॉलेज से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की । 1951 में अपने दिल्ली विश्वविदयालय से इतिहास में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की । इतिहास में एम. ए. करने के बाद निर्मल दिल्ली के सेंट एटीफेन्स कॉलेज में ही इतिहास के प्राध्यापक नियुक्त हुए । दिल्ली स्थित सेंट स्टिफेन्स कॉलेज अभिजात्य वातावरण के लिए जाना जाता है लेकिन आप इस वातावरण से अछूते रहते हुए इससे ठीक विपरीत मार्क्सवादी विचारधारा के संपर्क में आये । इन दिनों आपने मार्क्सवादी साहित्य का काफी अध्ययन किया । इतना ही नहीं बाकायदा आपने साम्यवादी दल की सदस्यता भी ले ली । निर्मल के लिए साहित्य जितना अर्थ रखता था, उतनी ही राजनीति भी । लेकिन 1956 में हंगरी की घटनाओं के बाद निर्मल का मार्क्सवाद से मोहभंग होने लगा । हंगरी की घटना से विचलित होकर आपने साम्यवादी दल की सदस्यता से त्याग–पत्र दे दिया ।

निर्मल को बचपन से ही पढने का शौक था । यही शौक आगे चलकर उनके साहित्य से संपर्क का कारण बना । निर्मल के घर में बडे भाई–बहनों के लिए 'कल्याण', 'वीणा', 'सरस्वती' व 'माधुरी' जैसी कहानियों की पत्रिकाएँ आतीथीं । निर्मल भी इन पत्रिकाओं को पढ लिया करते थे, जिससे निर्मल का साहित्य से परिचय

गहराता गया । निर्मल को रचनाकार बनाने में दिल्ली के साहित्यिक माहौल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । 1950 के आसपास दिल्ली का वातावरण काफी उत्साहवर्धक था । इस वातावरण में निर्मल को नरेश मेहता, मनोहर श्याम जोशी व श्रीकांत वर्मा जैसे अपनी हम उम्र के कई लेखकों का साथ मिला । वे इन सबके साथ अक्सर कविता, कहानियों पर बहस करते थे । इसी माहौल से उनके अंदन रचनाकार सजग हो गया । निर्मल ने पहली कहानी 14–15 वर्ष की उम्र में लिखी । जो. सेंट स्टीफेन्स कॉलेज की पत्रिका में प्रकाशित हुई । सार्वजनिक तौर पर निर्मल वर्मा की कहानी 'रिश्ते' हैदराबाद से प्रकाशित 'कल्पना' पत्रिका में प्रकाशित हुई । इसके बाद रात और दिन, थिगलियाँ, लेवलक्रॉसिंग और बैंगारेल आदि कहानियाँ भी कल्पना में प्रकाशित हुई, किंतु साहित्य जगत् में निर्मल को पहचान मिली 'परिंदे' के प्रकाशन से ! 1958 में अमृतराय के संपादन में निकले 'हंस' के अर्ध्दवार्षिक संकलन में 'परिंदे' का प्रकाशन हुआ । जिसकी साहित्य जगत् में काफी चर्चा हुई । कहानी संग्रह के रूप में 'परिंदे' का प्रकाशन 1960 में हुआ । लेकिन इसके प्रकाशन से पहले ही चैक साहित्य के अध्ययन के लिए प्राच्च विदया संस्थान और चेकोस्लोवाक लेखक संघ के आमंत्रण पर चैकोस्लावाकिया चले गए ।

स्वयं निर्मल द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार उनका विवाह 1964 में हुआ । इस विवाह से निर्मल एक लडकी के पिता है । निर्मल वर्मा का लेखन गंभीर चिंतन व रचनात्मक उत्कृष्टता का परिणाम है । इसी उत्कृष्टता के कारण उनकी कई रचनाओं को तथा उन्हें पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है । अब तक निर्मल वर्मा जी के छ कहानी संग्रह, पाँच उपन्यास, सात निबंध संग्रह, दो यात्रा–संस्मरण, चार संकलन और कुछ अनुवाद कार्य प्रकाशित हुए हैं । यहाँ हम उनका चर्चित उपन्यास 'एक चिथडा सुख' पर विचार करेंगे –

'एक चिथडा सुख' उपन्यास की कथा थिएटर के सम्मोहन में खोये कुछ युवक–युवतियों की कथा है । ये युवक और युवतियाँ बिट्टी, डैरी, इरा व नित्तिभाई अपने आसपास की दुनिया को भूलकर पूरी तरह थिएटर में खोए हैं । मुन्नू, जो बिट्टी का कजिन है और इलाहाबाद से आया है, इन सभी के कियाकलापों को देखता है और अपनी डायरी में लिखता रहता है । बिट्टी इलाहाबाद से अपना घर छोडकर कुछ बनने, अपने आपको खोजने दिल्ली आयी है, लेकिन वह खुद को भी कहाँ खोज पायी । इसी खोज में आखिर वह दिल्ली भी छोडकर जाने की सोचती है । दिल्ली में थिएटर ही उसकी दुनिया बन गई है । हालांकि थिएटर के सिवाय बिट्टी को दूसरे किसी का खयाल है तो वह डैरी का है । लेकिन डैरी भी यहाँ थिएटर का ही एक हिस्सा बन गया है । बिट्टी की तरह इरा है, जो नित्तीभाई के पीछे लंदन छोडकर दिल्ली आयी है । इरा दिल्ली में नाटकों के रिहर्सल में नित्तीभाई को पाने का प्रयास करती है । लेकिन नित्तीभाई भी उसके लिये 'नाटक में यथार्थ' की तरह है, जो कभी नहीं मिल करता । आखिरकार वह लंदन लौटने का निर्णय करती है और उसके दिल्ली रहते जो नित्तीभाई अपनी पत्नी व बच्चों को छोडने का निर्णय चाह कर भी नहीं ले पाते । इरा का पत्र पढकर जिंदगी छोडने का निर्णय ले लेते हैं । उपन्यास में एक पात्र डैरी भी है, जो विश्वविदयालय की पढाई बीच में छोडकर बिहार के गाँवों में चले गए थे । हालांकि वे दिल्ली लौट आए हैं, लेकिन घर नहीं लौटे, थिएटर के होकर रह गए ।[1]

इस उपन्यास के पात्र बिट्टी, डैरी, इरा, नित्तीभाई सभी थिएटर में इस कदर खोए हैं कि उन्हें नाटक और असल जिंदगी में कुछ अंतर नहीं लगता । उपन्यास में लगातार स्ट्रिनबर्ग के एक नाटक की रिहर्सल चलती है । नाटक और जीवन के पार्ट कुछ इस तहर घुल–मिल जाते हैं उसको अलग करना कठिन ही नहीं गलत भी लगने लगता है । असल में यह नाटक की रिहर्सल की जिंदगी की रिहर्सल लगती है । इस जिंदगी को जिसे बिट्टी और उसके दोस्त लगातार खोजते रहते हैं, लेकिन जिस कह रिहर्सल में बहुत कुछ छूट जाता है, उसी तरह इनकी जिंदगी में से भी काफी कुछ निकल कर चला गया है ।[2]

यह उपन्यास 'सुख' और दुःख' के दो छोरों के बीच रचा गया है । लेखक ने 'सुख' को परखने और 'दुःख' को पहचानने का प्रयास किया है । उपन्यास के सभी पात्र 'सुख' की खोज में भटक रहे हैं । लेकिन सुख कितना छोटा होता है? सुख आता भी नहीं कि चला जाता है । जब आता है तो चिथडों के रूप में जिसे हम पहचान ही नहीं पाते और ज बवह जिंदगी से निकल जाता है तो हम उसे पहचानने और पकडने का असफल प्रयास करते हैं । इस उपन्यास के पात्र 'सुख' की खोज में भटकते हुए स्वयं 'दुःख' बन गए हैं ।[3]

दुःख की तरह उपन्यास में सुख को भी परिभाषित किया गया है । बिट्टी मेले में बौने से पूछती है कि सुख क्या होता है? बौना अपनी देह से चौगा उतार देता है और अपनी ठूँठी देह पर डोल रहे अधमरे चिथडे को उतार कर उसके पाँवो में रख देता है ।[4]

स्पष्ट है कि इस उपन्यास में मुख्य समस्या आत्म–संतुष्टि या सुख की खोज में भटक रहे कुछ युवाओं की है । इस खोजबीन में ये पात्र स्वयं को भूल जाते है और उनकी जिंदगी नाटक के पात्रों की तरह हो जाती है और इन्हें अपना व्यक्तित्व ही पराया–सा लगने लगता है । इस उपन्यास की नायिका बिट्टी इलाहाबाद से अपना भरा–पूरा घर छोडकर दिल्ली आती है । बिट्टी की इलाहाबाद से दिल्ली की यह यात्रा अपने आपको पाने, अपने अस्तित्व को तलाशने और सुख से साक्षात करने की यात्रा है लेकिन वह इसमें सफल नहीं हो पाती और आखिर में दिल्ली छोडने पर विचार करने लगती है । बिट्टी नित्तीभाई से कहती है – ''हाँ, ऐसा होता है । स्टेज पर कभी–कभी लगता है, मैं वह नहीं हूँ, जो अपने को समझती आयी थी... मुझे कुछ ऐसा भ्रम होता है, जैसे मैं अपने बारे में कुछ ऐसा जान गयी हूँ, जो किसी को नहीं मालूम, जैसे–जैसे कोई दरवाजा खुल गया है, जहाँ से मैं गुजर सकती हूँ – नित्तीभाई मैं समझा नहीं सकती... बाद में मुझे कुछ भी याद नहीं रहता, क्या ऐसा असली जिंदगी में नहीं हो सकता ।''[5]

संदर्भ ग्रंथ सुची –

1 एक चिथडा सुख–निर्मल वर्मा पृ. 69
2 एक चिथडा सुख–निर्मल वर्मा पृ. 60
3 एक चिथडा सुख–निर्मल वर्मा पृ. 65
4 एक चिथडा सुख–निर्मल वर्मा पृ. 97
5 एक चिथडा सुख–निर्मल वर्मा पृ. 86